अध्याय : पन्द्रह

रमेशचन्द्र झा

रमेशचन्द्र झा भोजपुरी-हिंदी सुप्रसिद्ध रचनाकार रहीं । उहाँ के जनम पूर्वी चंपारन जिला के सुगौली अंचल का फुलवरिया गाँव में भइल रहे । पिता श्री लक्ष्मीकान्त झा जिला के एगो प्रमुख नेता रहीं । रमेशो जी बयालिस का आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिहली । जेलो गइलीं । उनका स्वतंत्रता-सेनानी के ताम्रपत्र आ पेंशन मिलल । ऊ बहुत दिन ले चंपारन जिला बोर्ड प्रेस के मैनेजर का रूप में काम करत रहले आ 1984 में सेवानिवृत्त भइले । 7 अप्रिल 1994 के रात में अपना धरती पर छियासठ-सड़सठ का उमिर में उहाँ के निधन हो गइल ।

रमेशचन्द्र झा जी उपन्यास, कहानी, कविता, गीत, निबंध संस्मरण आ बाल-साहित्य का अलावा शोध भी कइलीं । पचास गो से ढेर किताब उहाँ के प्रकाशित बा । हिंदी के तीन गो साप्ताहिक पत्रन के उहाँ का संपादनो कइलीं । उहाँ के तीन गो किताब चंपारन की साहित्य साधना', चंपारन : साहित्य और साहित्यकार' आ 'अपने और सपने' भोजपुरी में लिखल उहाँ के उपन्यास 'सुरमा सगुन बिचारे बा' अपना ढंग के महत्त्वपूर्ण कृति बा। ई 'भोजपुरी कहानियाँ' । (वाराणसी) में धारावाहिक छपल रहे । पचास का दशक में उहाँ गीत-गजल भोजपुरी, 'अँजोर' में छपे ।

विषय-प्रवेश

एक भौतिकवादी युग में स्वार्थ क समुंदर में आकंठ डूबल समाज के यथार्थ आ भयावह चित्र एह गीत में उकेरल गइल बा । हर आदमी स्वार्थ में आन्हर होके चोर, बेइमान, व्यभिचारी आतंकी इत्यादि बन रहल बा, जवना से समाज से सात्विक भाव के लोप हो रहल बा । चारो ओर आतंक के साया में जिए खातिर मजबूरी होत जा रहल बा।

आग पर तप रहल जिन्दगी

आग पर तप रहल जिन्दगी
आमने-सामने आदमी !

जान पहचान के चेहरा,
लग रहल आजकल अजनबी !

आज बारूद का बीज के,
कह रहल लोग चम्पाकली !

कर्म के ग्रंथ अब के लिखी
लिख रहल देश रोकड़-बही !

आज पहरू लुटेरा भइल,
काल्ह तक जे रहल संतरी ।

हर गली में दु:शासन इहाँ,
हार बइठल कहीं द्रौपदी !

आदमी का बदे आचमन,
देवता का बदे अंजली !

हर दिसा से धुआँ उठ रहल,
हर नगर गाँव में सनसनी !

हस्त रेखा बिगड़ते गइल,
भाग्य पढ़ले बहुत ज्योतिसी !
सेनका हो गइल कुलबधू,
घोर अपराधिनी कुलवती !
आज उनके समुन्दर मिलल,
पी गइल जे नदी के नदी !

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जिन्दगी कवना चीज पर तप रहल बा ?

(क) आग पर (ख) बारूद पर

(ग) धूप में (घ) एह सब पर

2. आज के परिस्थिति में पहचानलो चेहरा कइसन लाग रहल बा ?

(क) डरावना (ख) उदास

(ग) अजनबी (घ) विकृत

3. कवना चीज का प्रभाव में लोग बारूद के चंपाकली समुझता ?

(क) राजनीति के प्रभाव में (ख) भौतिकता का प्रभाव में

(ग) पूँजीवाद आ प्रभाव में (घ) समाजवाद का प्रभाव में

4. आज के बिगड़ल परिस्थिति में के कुलवधू हो गइल हवा ?

(क) उर्वशी (ख) द्रौपदी

(ग) अपराधिनी (घ) मेनका

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. द्रौपदी काहे हरि के बइठ गइल बाड़ी ?

2. काल्ह तक जे संतरी रहे उ आज का भ गइल बा ?

3. आदमी के बदे 'आचमन' आ देवता का बदे अंजली में कवन भाव छिपल बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रमेशचन्द्र झा जी अपना एह गीत में का जवन विकृत परिस्थिति के वर्णन कइले बाड़ें ओकर संक्षेप में वर्णन करीं ।

2. द्रौपदी आ मेनका के कहानी संक्षेप में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. देश के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थिति में आइल विकृति से संबंधित कवनो आउर कविता खोज के प्रस्तुत करीं ।

2. समय का अनुसार समाज में आइल बदलाव पर अपना दोस्तन का संगे बइठ के चर्चा करीं।

शब्द-भंडार

अजनबी – अनजान, जेकरा से पहिले चिन्हा-परिचे ना होखे

रोकड़-बही – रुपिया-पैसा के हिसाब लिखे वाली बही

पहरू – पहरेदार, पहरुआ

संतरी – सिपाही, रक्षक

आचमन – भोग के बाद जल पिआवल, पूजा में जल-स्पर्श

अंजली – फूल समर्पित कइल, अंजुरी के भर के फूल चढ़ावल

लुटेरा – लूटे वाला

सनसनी – आतंक आ भय के माहौल ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अध्याय : सोलह

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा

विशेष-प्रवेश

लोक जीवन से स्वाभाविक रूप से उपजल अइसन नाटकन में आम आदमी के सुख-दु:ख के सही अभिव्यक्ति भइल बा। भोजपुरिया संस्कृति के सोर बड़ी गहिरा गइल बा। इहे वजह बा कि पश्चिमी सभ्यता के चकाचौन्ध के बादो एजवा के संस्कृति बाचल बा। परंपरागत रूप से चलल चल आवल रीति-रिवाज आजो कवनो-ना-कवनो रूप में प्रयोग में बा। लोक नाटक, संवाद आ सुख-दुख के अभिव्यक्ति के एगो बरियार विधा रहल बा।

अइसन में 'भोजपुरी लोकनाट्य डोमकच' निबंध ना खाली भोजपुरी क्षेत्र के लोक नाटकन से परिचित करावता बलुक आजो के परिवेश में ओकर उपयोगिता दर्शावता।